कयामत आई रे

कयामत आई रे साथजी, कयामत आई।
वेद कतेब पुकारत आगम, सो क्यों न देखो मेरे भाई।।

जो साहेब किने न देखिया, ना कछू सुनिया कान।
सो साहेब काजी होए के, जाहेर करसी कुरान।।

और भी फरमान में लिख्या, कोई खोल ना सके किताब।
सोई साहेब खोलसी, जिन पर धनी खिताब।।

ए साखें सब पुकारहीं, निपट निकट कयामत।
आए गई सिर ऊपर, तुम क्यों न अजूं चेतत।।

साथजी साफ हुए बिना, अखंड में क्यों पोहोंचत।
चेत सको सो चेतियो, पुकार कहें महामत।।